Answers to RHA–DS2/Set-1

1. (*i*) (ग) महँगाई

(*ii*) (घ) अर्थव्यवस्था से

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (क) महँगाई को बढ़ाती हैं।

(*v*) (घ) कथन (1) और (2) सही हैं।

2. (*i*) (ग) वसंत ऋतु

(*ii*) (क) प्रकृति में फैली हुई फूलों की सुगंध का वर्णन

(*iii*) (ग) कथन (A) और कारण (R) सही हैं तथा कथन (A) कारण (R) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (क) धन्यता वसंत ऋतु की कमाई नहीं है।

(*v*) (ग) सभी ऋतुओं का महत्व है।

3. (*i*) (ख) एक चश्मे वाले का नाम कैप्टन है।

(*ii*) (क) घर में पतोहू रो रही है और गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं।

(*iii*) (घ) उन्होंने, हिंदी-अंग्रेज़ी शब्दकोश तैयार किया जो विश्वभर में प्रसिद्ध है।

(*iv*) (क) (1) और (3) सही हैं।

(*v*) (ग) 1–(*ii*), 2–(*iii*), 3–(*i*)

4. (*i*) (ख) शहनाई के मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब के द्वारा अस्सी बरस से शहनाई का सुर माँगा जा रहा है।

(*ii*) (घ) कर्तृवाच्य का

(*iii*) (क) भाववाच्य

(*iv*) (ग) 1 और 4 सही हैं।

(*v*) (घ) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)

5. (*i*) (ग) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, बहुवचन, कर्ता कारक

(*ii*) (क) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक

(*iii*) (ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'आ रहा है' क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(*iv*) (क) गुणवाचक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, 'पुरुष' विशेष्य का विशेषण

(*v*) (ग) भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक

6. (*i*) (क) उल्का सी रानी दिशा दीप्ति करती थी
सबमें मानो भव्य-विस्मय और खेद भरती थी।

(*ii*) (ग) श्लेष

(*iii*) (ख) मानवीकरण

(*iv*) (ग) अतिशयोक्ति

(*v*) (घ) श्लेष

7. (*i*) (ग) सूँघकर संतुष्टि प्राप्त करना

(*ii*) (ख) खीरा लज़ीज़ होता है।

(*iii*) (घ) नवाब साहब खीरा खाने का दिखावा कर रहे थे।

(*iv*) (ग) लेखक को नयी कहानी लिखने का विषय मिल गया।

(*v*) (क) अमाशय

8. (*i*) (ग) (क) तथा (ख) दोनों सही हैं।

(*ii*) (घ) संत-समागम तथा लोक-दर्शन पर उनकी आस्था थी।

9. (*i*) (ग) श्रीकृष्ण से

(*ii*) (ख) करुई ककरी के समान

(*iii*) (क) जिसका मन अस्थिर रहता है

(*iv*) (ख) श्रीकृष्ण के प्रति आस्थावान है।

(*v*) (क) विरह वर्णन

10. (*i*) (ख) लक्ष्मण को मारकर

(*ii*) (ख) संगतकार की

11. (क) पाठ में अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि बालगोबिन भगत सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। उदाहरण के लिए बेटे की मृत्यु को एक उत्सव के रूप में मानना, पुत्र का दाह-संस्कार बहू से करवाना, पुत्रवधू को दूसरी शादी का आदेश देना तथा पुत्र के क्रिया-कर्म में दिखावा न करना आदि। वे गृहस्थ होते हुए भी साधुओं जैसी वेश-भूषा तथा रहन-सहन को अपनाते थे।

(ख) लेखिका अपनी कॉलिज की छात्राओं का नेतृत्व करती थीं। सारा कॉलिज उसके इशारों पर चलता था। उसके एक इशारे पर सारी लड़कियाँ क्लास छोड़कर बाहर आ जाती और मैदान में इकट्ठे होकर नारे लगाती। इस कारण प्रिंसिपल को कॉलिज चलाना मुश्किल हो गया था। वह बहुत परेशान थी और तंग आकर लेखिका के पिता से अनुशासनात्मक कार्रवाई करने की शिकायत की।

(ग) शहनाई का उल्लेख तानसेन के द्वारा रची बंदिश में मिलता है। अवधी पारंपरिक लोकगीतों एवं चैती में भी इसका उल्लेख बार-बार मिलता है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्', की तरह शहनाई प्रभाती की मंगल ध्वनि की संपूरक है।

(घ) संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो किसी नई चीज़ की खोज करता है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है। उदाहरण के लिए न्यूटन एक संस्कृत व्यक्ति था क्योंकि उसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया।

12. (क) राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद पाठ में मुख्य पात्र हैं– राम, लक्ष्मण व परशुराम। लक्ष्मण और परशुराम में साहस व शक्ति दोनों हैं लेकिन वे क्रोध के कारण विनम्रता की सीमा लाँघ गए हैं। राम को साहसी, शक्तिशाली व विनम्रता का उदाहरण माना जा सकता है। उन्होंने परशुराम के धनुष को तोड़कर अपनी शक्ति का परिचय दिया और वे शांत व विनम्र भाव से लक्ष्मण को समझाते रहे।

(ख) कवि का निजी जीवन निराशा, दुख व कष्टों से भरा था, जिसका प्रतिबिंबन आत्मकथ्य कविता में हुआ है। कवि ने इस कविता के माध्यम से अपनी निजी पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। उनके जीवन में कभी खुशियाँ थीं, उमंग थी, आनंद था, परंतु अब

निराशा, दुख व सूनापन है। कवि ने अपनी प्रेयसी के सान्निध्य के सपने देखे थे लेकिन वे उसे प्राप्त न कर सके, उनका सपना साकार न हो सका। उनके निराश जीवन में न कोई सुख है, न आशा।

(ग) इन पंक्तियों में कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है। शिशु को स्पर्श देने मात्र से आनंद की इतनी अनुभूति होती है, मानो बाँस या बबूल से शेफालिका के फूल झरने लगे हों। यहाँ बाँस या बबूल के वृक्षों से शेफालिका के फूल झरने संबंधी बिंब द्वारा बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को व्यक्त किया गया है।

(घ) संगतकार एक छोटे भाई की तरह मुख्य गायक का साथ देता है। वह उसके साथ-साथ 'स्थायी' पंक्तियों को गाता है और अपनी उपस्थिति का अहसास कराता हुआ उसका साथ देता हैं वह इस बात का भी ध्यान रखता है कि उसकी आवाज़ मुख्य गायक की आवाज़ से ऊँची न हो। वह हमेशा अपने स्वर को नीचे रखकर मुख्य गायक की महत्ता को प्रतिष्ठित करना चाहता है।

13. (क) 'माता का अँचल' पाठ भोलानाथ की बाल-क्रीड़ाओं से भरा हुआ है। इस पाठ में भोलानाथ के बचपन की दुनिया को ही उकेरा गया है।

भोलानाथ अपने साथियों के संग टीले पर चूहे के बिल में पानी उलीचता है और उस बिल से साँप निकल आता है। साँप को देखकर भोलानाथ भागते-भागते अपनी माँ के आँचल में जाकर छिप जाता है। बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेल बाल क्रीड़ा के सुंदर उदाहरण हैं। बरात का जुलूस निकालना, कनस्तर का तंबूरा बजाना, अमोले को घिसकर शहनाई बजाना, टूटी चूहेदानी की पालकी बनाना, चबूतरा खेत बनाकर उसमें बीज डालना, उसे जोतना, बोना, पटाना और तैयार फसल को काटते समय मधुर गीत गाना आदि अनेक उदाहरण बाल-क्रीड़ाओं से भरे पड़े हैं।

(ख) पर्यटन स्थलों पर दुकानें खुलने से वहाँ का सौंदर्य खतरे में पड़ जाता है। वहाँ अधिक-से-अधिक लोगों का आना शुरू हो जाता है। जिससे प्रदूषण फैलने लगता है। लोग प्लास्टिक के थैले, डिब्बे और बोतलें इधर-उधर फेंक देते हैं। इतना ही नहीं पान-तंबाकू का सेवन कर गंदगी फैलाते हैं। इस प्रकार से प्रकृति प्रदत्त सुंदर स्थान व्यवसायीकरण का केंद्र बन जाता है। कटाओ स्विटज़रलैंड से भी ऊँचा व सुंदर स्थान है। अतः यहाँ दुकानों का न होना इसके मूल सौंदर्य के लिए वरदान है। केवल प्रकृति प्रेमी सैलानी यहाँ आते हैं और इस अनुपम सौंदर्य का आनंद उठाते हैं। दुकानें होने से यहाँ का सौंदर्य नष्ट हो जाएगा और केवल मौज मस्ती का केंद्र बनकर रह जाएगा। साथ ही नवयुवकों के लिए अवांछित गतिविधियों का अड्डा बन जाएगा।

(ग) 'मैं क्यों लिखता हूँ?' पाठ में लेखक ने स्पष्ट किया है कि अनुभूति प्रत्यक्ष अनुभव से गहरी चीज़ है। लेखन कार्यों में यह अनुभव की अपेक्षा अधिक मददगार होती है। हिरोशिमा में सबकुछ देखकर भी लेखक उस क्षण कुछ नहीं लिख सके, क्योंकि उन्होंने अनुभव तो कर लिया पर अनुभूति की कमी थी। एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली मानव छाया को देखकर उन्होंने अनुभूति कर ली। इसके बाद भारत वापस आकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे कविता लिख डाली। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सच्चा लेखन मन की भीतरी व्याकुलता से उत्पन्न होता है। यह व्याकुलता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से उत्पन्न होती है।

14. (क) **संयुक्त परिवार : आज की आवश्यकता**

आज के समय में संयुक्त परिवार का स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया है। सभी अकेले रहना ज्यादा पसंद करते हैं। पुराने समय में बड़े-बड़े परिवार एक-साथ मिल-जुलकर रहते थे। ज़रूरत पड़ने पर सभी एक-दूसरे के काम आते थे। आज के इस दौर में बढ़ती आधुनिकता ने परिवारों को एक-दूसरे से अलग कर दिया है। बच्चे बड़े होने पर अपनी इच्छा से अपना जीवन जीना चाहते हैं। आज की जीवनशैली, रहन-सहन के तरीकों और महँगाई ने भी कहीं न कहीं एकाकी रूप से जीवन जीने को बढ़ावा दिया है। सभी यह सोचते हैं कि इस महँगाई के समय में वे संयुक्त परिवार में रहकर अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकते। इसलिए सभी एकल परिवार के रूप में रहना ज्यादा पसंद करते हैं। लेकिन बच्चों की उचित देखभाल के लिए घर में बड़े बुज़ुर्गों का होना बहुत ज़रूरी है। माता-पिता के नौकरीपेशा होने और अधिक व्यस्तता के कारण बच्चों की उचित देखभाल नहीं हो पाती। कई बार इन्हीं सब कारणों से बच्चे गलत आदतों या अवसाद का शिकार हो जाते हैं। यदि

ऐसे में बुजुर्ग उनकी उनकी देखभाल करते हैं तो वे खुद को कभी अकेला नहीं समझते। अतः सभी को चाहिए कि वे एकाकी जीवन जीने की अपेक्षा संयुक्त परिवार को महत्व दें। ऐसा करने पर कहीं न कहीं मानसिक तनाव से भी बचा जा सकता है। व्यस्तता के कारण जो माता-पिता बच्चों को समय नहीं दे पाते, घर में अन्य लोगों के होने के कारण वे इन सभी चिंताओं से मुक्त रहेंगे और बच्चों में भी एकाकीपन नहीं पनपेगा।

(ख) **विद्यार्थी जीवन : शिक्षा और खेलकूद**

विद्यार्थी जीवन के लिए जितनी महत्वपूर्ण शिक्षा है उतना ही महत्वपूर्ण खेलकूद भी है। शिक्षा विद्यार्थी को यदि ज्ञान प्रदान करती है, उसका मानसिक विकास करती है तो खेल विद्यार्थी को स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाते हैं और उसका शारीरिक विकास करते हैं। शिक्षा विद्यार्थी के सोचने और समझने की शक्ति को विकसित करती है तो खेल विद्यार्थी के अंदर सामूहिक भावना का विकास करते हैं। आजकल विद्यालयों में भी ऐसी शिक्षा पद्धति को अपनाया जा रहा है जिसमें खेलों के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में तनाव से मुक्ति के लिए भी खेलकूद एक अच्छा माध्यम है। विद्यार्थियों पर शिक्षा का भार अधिक होने से वे कहीं न कहीं मानसिक दबाव महसूस करते हैं। लेकिन यदि उनके द्वारा खेलकूद को अपनी दिनचर्या का एक अनिवार्य अंग बना लिया जाए तो विद्यार्थी पढ़ाई के तनाव से दूर रह सकते हैं। जिस प्रकार से शिक्षा विद्यार्थी के चारित्रिक निर्माण में मुख्य सहायक की भूमिका निभाती है वैसे ही खेलकूद भी विद्यार्थी का चरित्र निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि कोई विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में अवसर नहीं प्राप्त कर पाता तो अच्छा खिलाड़ी होने पर वह खेल व्यवसाय में अपने लिए उचित अवसर प्राप्त कर सकता है।

(ग) **भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव**

किसी भी देश की संस्कृति से अभिप्राय है– वहाँ की परंपराएँ रीति-रिवाज, रहन-सहन और खान-पान इत्यादि। वास्तविक रूप में संस्कृति परंपराओं से ही मिलकर बनती है। इनसे हमारे जीवन के मूल्य निर्धारित होते हैं। भारतीय संस्कृति अपने आप में अनूठी और अद्भुत सौंदर्य से युक्त है। किंतु आजकल बदलते परिवेश के कारण भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक दिखाई देने लगा है। हमारी परंपराओं की प्रासंगिकताएँ और हमारे जीवन-मूल्य भी बदल रहे हैं। आज के समय में लोगों के खान-पान और रहन-सहन में भी बहुत अधिक बदलाव आ गया है। आज पौष्टिक भोजन का स्थान फास्ट फूड, जंक फूड आदि ने, सादगी भरे जीवन का स्थान दिखावे ने और संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है। अब मनुष्य की आवश्यकताएँ और इच्छाएँ संतुलित होने की बजाय दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं जिससे उसके पास न खुद के लिए समय है और न परिवार और सगे-संबंधियों के लिए। अतः इस समय यह सोच-विचार करने की बहुत अधिक आवश्यकता है कि आज पाश्चात्य संस्कृति को अपने ऊपर अधिक प्रभावी करके कहीं हम अपनी संस्कृति के साथ खिलवाड़ तो नहीं कर रहें। कहीं हम अपने जीवन के वास्तविक मूल्यों को तो नहीं खो रहें।

15. सेवा में

प्रधानाचार्य

अ० ब० स० विद्यालय

य० र० ल० नगर

दिनांक : 5 जुलाई, 20xx

विषय–विद्यालय में समसामयिक विषयों से संबंधित पत्रिकाएँ मँगवाने हेतु।

महोदय,

मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। हमारे विद्यालय में वैसे तो सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं पर मैं पुस्तकालय की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ।

हमारे विद्यालय का पुस्तकालय काफी बड़ा है। यहाँ सभी विषयों से संबंधित ज्ञानवर्धक पुस्तकें अधिक से अधिक संख्या में

उपलब्ध हैं। मुझे और मेरे कुछ मित्रों को केवल एक बात की कमी लगती है कि यहाँ पर समसामयिक विषयों से संबंधित पत्रिकाओं का अभाव है। आज के समय में जीवन में आगे बढ़ने के लिए सभी समसामयिक विषयों से संबंधित पत्रिकाओं का पुस्तकालय में होना अत्यंत आवश्यक है। आपके द्वारा सभी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए सदा सराहनीय प्रयास किए गए हैं।

आशा है कि आप समसामयिक विषयों से संबंधिक महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ पुस्तकालय के लिए अवश्य मँगवाएँगे। मैं और मेरे विद्यालय के अन्य सभी छात्र-छात्राएँ इसके लिए सदा आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीया

भावना

अथवा

परीक्षा भवन

नई दिल्ली।

दिनांक : 30 मई, 20xx

प्रिय मित्र रमेश,

सस्नेह नमस्कार।

आज प्रातः समाचार पत्र पढ़ते हुए यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि समाचार-पत्र के मुख्य पृष्ठ पर ही तुम्हारी फोटो छपी हुई थी। उसी से ज्ञात हुआ कि तुमने एन०डी०ए० की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

तुम्हारी इस शानदार सफलता को देखकर मुझे जो हार्दिक प्रसन्नता हुई उसे शब्दों में व्यक्त करना बहुत कठित है। मुझे तुमसे यही आशा थी। एन०डी०ए० की परीक्षा के प्रति सच्ची लगन और तुम्हारे कठिन परिश्रम को देखकर मुझे यह पूर्ण विश्वास था कि तुम एक दिन अपने विद्यालय का और अपने माता-पिता का नाम रोशन करोगे। तुम्हारी इस शानदार सफलता पर मेरी ओर से तुम्हें हार्दिक बधाई।

मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि तुम जीवन में सदैव अपने पथ पर अग्रसर रहो और पूर्ण समर्पण भाव से देश की सेवा में समर्पित रहो।

तुम्हारा मित्र

क०ख०ग०

16. नाम – मयंक

पिता का नाम – श्री सुरेश कुमार

माता का नाम – श्रीमती विमला देवी

जन्मतिथि – 10 मई, 20XX

वर्तमान पता – य०र०ल० नगर, दिल्ली

स्थायी पता – उपर्युक्त

टेलीफोन नं० – 011-8279xxxxxx

मोबाइल नं० – 9723xxxxxx

ई-मेल – mayank@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2016	अ०ब०स० विद्यालय, सी०बी०एस०ई०, दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	72%
2.	बारहवीं कक्षा	2018	अ०ब०स० विद्यालय, सी०बी०एस० ई०, दिल्ली	अंग्रेज़ी, गणित, अकाउंट्स, अर्थशास्त्र, व्यावसायिक अध्ययन	प्रथम	78%
3.	बी०कॉम०	2021	अ०ब०स० कॉलेज, दिल्ली	अर्थशास्त्र, बैंकिंग, गणित, अकाउंट्स	प्रथम	70%
4.	एम०बी०ए०	2023	अ०ब०स० विश्वविद्यालय, दिल्ली	फाइनेंस	प्रथम	74%

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान
- अंग्रेजी में 40 शब्द प्रति मिनट से टंकण करने में सक्षम

उपलब्धियाँ

- महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में सेमिनार गतिविधियों में प्रथम स्थान

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित योग्यताएँ मुझमें हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं अपना कार्य निष्ठा के साथ करूँगा।

धन्यवाद सहित।

मयंक

अथवा

प्रेषक : abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता : xyz@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) : xyz@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) : abc@gmail.com

विषय : एटीएम कार्ड न मिलने की शिकायत हेतु।

महोदय,

मैं दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र का निवासी हूँ। मैंने दो माह पूर्व स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में अपना खाता खुलवाया था। साथ ही मैंने अपना एटीएम कार्ड बनवाने के लिए भी आवेदन किया था। मेरी बचत खाता संख्या 74258630141 है। समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करने के उपरांत भी मुझे आज तक मेरा एटीएम कार्ड प्राप्त नहीं हुआ है। मैंने संबंधित अधिकारियों से कई बार एटीएम कार्ड के बारे में पूछताछ की लेकिन कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला।

आपसे अनुरोध है कि इस विषय में उचित कार्यवाही करके मेरा एटीएम कार्ड शीघ्र उपलब्ध कराकर अनगृहीत करें।

सधन्यवाद

भवदीय

क०ख०ग०

17.

नेत्रदान महादान

आपके द्वारा किए गए नेत्रदान से किसी को रोशनी की नई किरण मिल सकती है।

✦ आपके क्षेत्र में 'नेत्रदान शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। विवरण इस प्रकार है–

दिनांक : 20 मई, 20xx

समय : प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

स्थान : विकासपुरी, 'ए' ब्लॉक, नई दिल्ली

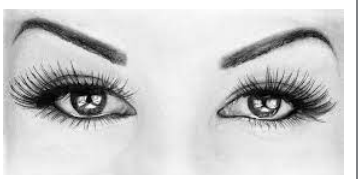

नेत्रदान एक पुण्य कार्य है, कृपया इस कार्य में अधिक से अधिक लोग भाग लें।

नवदृष्टि सामाजिक संस्था, नई दिल्ली के सौजन्य से सम्पर्क करें– 9628xxxx

अथवा

संदेश

दिनांक : 4 अगस्त, 20xx

पूर्वाह्न : 8 बजे

पूज्या दीदी,

आप पहली बार किसी विदेश-यात्रा पर जा रही हो। ईश्वर करे आप जिस कार्य के लिए जा रही हो वह कार्य पूर्ण रूप से सफल हो। आपकी यह विदेश-यात्रा, पल-पल सुखद रहे। आपकी यात्रा मंगलमय एवं रोमांचकारी हो। ईश्वर आपकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करे। मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

आपका छोटा भाई

मनीष